

الحمد لله الذي  
جعلنا من عباده



ग़ौसे आजम  
की  
तकरीरें



## खुत्बात हजरत गौसे आजम( रह०अ० )

हजरत सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी( रह०अ० ) के मवअज और खुत्बात का सिलसिला 521हि० में शुरू हुआ और 561हि० तक जारी रहा। इस असे के दौरान आपने बेशुमार तकरीर कीं। आपके वअज बड़े पुर असर होते थे इसलिए इन खुत्बात ने लोगों के दिलों की दुनिया बदल डाली। आपकी रूहानी तवज्जह और शीरीं ज़बान की तासीर ने बेशुमार इंसानों को राहे हक की तरफ गामज़न कर दिया। कई लोगों को ईमानी इसतहेकाम मिला। आपके वअजों से कुफ़्र व शिर्क मांद पड़ गया बिदआत और ग़लत दीनी रसूम की इसलाह हुई और दीने हक में नोबहार आ गई। आपकी नूरानी महाफिल के वअज आज भी दिल में तलाशे हक की सच्ची तड़प पैदा करते हैं। ग़ाफिल लोगों को ग़फ़लत से बेदार करते हैं। भटके हुए लोगों को सिराते मुसतकीम मिलता है।

हजरत गौसे आजम( रह०अ० ) के खुत्बात और मवअज बिलाशुबह मुसलमानों के लिए मशअले राह हैं। ज़ाहिरी और बातिनी हालात को संवारने के लिए एक बैश-बहा खज़ाना हैं। उनके ज़रिये तालिबाने हक और सालकाने तरीक़त की राहनुमाई होती है। आपके ये खुत्बात “अलफतह रब्बानी” के नाम से इल्मी दुनिया में आज तक मेहफूज़ हैं। इस किताब में आपके रफीअ उश्शान खुत्बात व मवअज के महेज़ चन्द नमूने और इक्तिबासात पेश किए जाते हैं। चूंके आपकी अस्ल तकरीर अबी में होती थी इसलिए तर्जुमा और तलख़ीस के पढ़ने से अस्ल का लुत्फ और नफ़अ तो हासिल नहीं हो सकता क्योंकि बअज अवक़ात नफ़से मज़मून से ज़्यादा अंदाज़े बयान मोस्सर होता है। बहेर हाल इन इक्तिबासात से आपके मवअज की शान और तासीर का अंदाज़ा हो सकता है।

खुतबए सरकारे गौसे आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु

15 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोज हफ़ता

\*\*\* औलिया अल्लाह के दिल पाक व साफ़ होते हैं

वह मखलूक को भूलते हैं और खालिक को याद रखते हैं।  
दुनिया को भूलते हैं आखिरत को याद रखते हैं तुम अपनी  
दुनियावी मसरूफ़ियतों की बिना पर उनकी शान व तमकेनत  
को नहीं देख सकते। तुम्हारे और उनके बीच एक ज़बरदस्त  
ख़ला (ख़ाली जगह) है।

\*\*\* अगर कोई मोमिन तुझे नसीहत करे तो सुन कर

मुख़ालफ़त न करो क्योंकि वह तेरे अन्दर वह बातें देखता है जो  
तू खुद नहीं देख सकता। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि  
वसल्लम ने फ़रमाया है मोमिन मोमिन का आइना होता है।  
मोमिन अपने भाई मोमिन को सच्चे दिल से नसीहत करता है उसमें  
क्या ऐब है क्या खूबियाँ हैं साफ़ साफ़ बयान कर देता है।

\*\*\* पाक है वह ज़ाते जुलजलाल जिसने मेरे दिल में

भी हमारे मोमिन भाईयों के नसीहत व ख़ैरख़्वाही की आमादगी  
पैदा कर दी। अब यही मेरा दिलचस्प मशग़ला है कि मैं तुमसे  
वह सच्ची बातें कहता जाऊँ और बताता जाऊँ जो मैं समझता  
हूँ, इसका कोई दुनियावी बदला मैं नहीं चाहता न उख़रवी  
बदला, बदला तो मेरा मअबूदे हकीकी खुद होना चाहिए और  
यही मेरा अस्ल मक़सद है हाँ मुझे अपनी कौम की फ़लाह व  
कामरानी से खुशी होती है उनकी तबाही मेरे दिल पर तीर

चलाती है अगर मैं किसी मुरीदे सादिक को कामयाब बामुराद देखता हूँ तो मेरा दिल अपने खालिके काएनात के आगे बहुत ज्यादा खुशी के साथ सजदे में झुक जाता है।

\*\*\* ऐ गुलाम! मैं तेरी इस्लाह को अपना मकसद समझता हूँ अपने जाती नफा को अपना मकसद नहीं समझता। मैंने इस मरहले को तय कर लिया है हाँ मैं तुझे इस रास्ते (यानी नेक रास्ते पर) पर चला कर तेरी दस्तगीरी (मदद) करना चाहता हूँ, तो तू मुझसे मदद ले और कामयाबी की राह पर तेजी के साथ रवाना हो ----- न तुमको गुरुर अल्लाह तआला के मुकाबले में जेब दे सकता है न मखलूक के मुकाबले में बल्कि तुमको अपनी हैसियत पहचानना चाहिए तुम क्या थे? एक हकीर नुतफा एक बहते पानी के कतरों की तरह, बेजान तुम्हारा अन्जाम क्या होगा एक मुर्दा लाश जिसे कीड़े और कुत्ते खाने के लिए बेताब रहेंगे इसलिए जो शख्स तुम्हें दुनिया की लालच व हिरस के लिए दुनिया के मगरूर बादशाहों की चौखट पर माथा रगड़ना सिखाता है ताकि तुम्हें सोने चांदी के कुछ टके मिल जायें जिसको तुम अपनी किस्मत के हकीकी और जाएज टुकड़ों से ज्यादा समझ रहे हो वह तुम्हें सख्त गुमराही में डालने वाला शैतान है। याद रखो तुम्हारे लिए इस हिरस व लालच का नतीजा जिल्लत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया है खुदा के पास वह बन्दा ज्यादा सजा के लायक है जो अपने रिज्क से बढ़कर रिज्क चाहता है अगर तुम यह समझते हो कि दुनिया के यह बन्दे तुमको इतना ज्यादा दे सकेंगे कि हकीकी तलब धिर जाएगा तो तुम तकदीर के फैसलों से गाफिल हो, यह वसवसा तुम्हारे दिल में शैतान का डाला हुआ है तुम खुदा के बन्दे नहीं अपने नफ्स व हवस के बन्दे हो, शैतान के कैदी हो दिरहम व दीनार का तुम पर जादू चल गया है, कोशिश करो कि तुम्हें इस कैद से रिहाई मिले और रिहाई हासिल करने के लिए तुम्हें किसी कामिल रहनुमा की



जरूरत है। इसलिए रहनुमा की तलाश करो लेकिन ऐसा रहनुमा जाहिरी आंखों के टटोलने से नहीं मिलता, दिल और बातों की आंखों के जरिए ढूँढने से मिल सकता है। इस तलाश के लिए ईमान जरूरी है जब ईमान न हो तो दिल भी रौशन नहीं होता। अल्लाह तआला ने फरमाया है :-

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

तर्जमा : इसलिए कि आंखें अंधी नहीं होतीं और लेकिन वह दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं।

ईमान का न होना जाहिरी आंखों को अन्धा नहीं बनाता है बल्कि उन दिलों को अंधा बना देता है जो सीनों में हैं। लालच और खुशामद के जरिए दुनिया हासिल करने की मिसाल ऐसी है जैसे सोना घास के वजन पर लिया जाए। घास थोड़ी देर में जल कर राख हो जाएगी और सोना भी हाथ से गया।

अगर तुम्हारा ईमान नाकिस है तो लोगों से मेलजोल रख कर कुछ दुनिया जरूर जरूर हासिल करो, इस का नाम मईशत है यानी ज़िन्दगी के गुज़ारने का सामान है मगर जिस कद जल्द हो सके अपनी मईशत की ऐसी इसलाह कर लो कि तुम आला दर्जे के मकसदों पर आ जाओ। जब तुम्हारा ईमान कवी हो जाएगा तो अब तुम तवक्कुल पैदा कर लो और असबाब से बेपरवाह हो जाओ। दुनिया वालों से मेल जोल व सुहबत कम होते होते आखिर तुम में वह रूहानी यकीन पैदा हो जाना चाहिए कि गोया अब तुम मलकुल मौत को रूह हवाले कर देने के लिए तैयार खड़े हो।

इस ज़िन्दगी के समुन्द्र में कज़ा व क़द्र की मौजें जहाँ तुम्हें ले जायें उसी तरफ़ तुम्हारी तवज्जो भी होनी चाहिए कि गोया अब असबाब के ख़्यालात तुम्हें काटने नहीं आयेंगे। मईशते दुनियावी की फ़िक्र तुम्हारी रूह में ज़रा बराबर भी बेचैनी पैदा न कर सकेगी।

ऐ शख्स ये तुझको मेरी नसीहत है इस पर अमल तेरी रूह को आला दर्जे की वलन्दी पर पहुँचाने का ज़िम्मेदार है

अगर तू इस पर पूरे तौर पर अमल नहीं कर सकता तो थोड़ा ही सही। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि "लोगो जितना भी तुमसे हो सके दुनिया की फिक्रों से नजात हासिल करो"

ऐ गुलाम जिस कदम जल्द दुनिया के गम से छुटकारा हासिल कर सकता है कर ले। अपने दिल को उस बेइन्तिहा रहमत के एक कनारे से बांध ले जो तेरे दिल की नाव को हकीकी इत्मिनान के कनारे पर पहुँचा दे। अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है, हर चीज़ का आलिम है उसके हाथ में सब कुछ है उससे मांगो तो पहले अपने दिल की तहारत मांगो, ईमान व मारिफत मांगो, इल्म मांगो और दिल में शाने बेनियाजी मांगो, यकीन की रौशनी मांगो, अल्लाह तआला ही से महबबत व उनसियत मांगो। जब ये चीज़ें मिल जायें तो सब कुछ मिल सकता है, गैर के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत ही नहीं तुम्हारा हकीकी मामला अल्लाह तआला से है, मगरूर व मखलूक के दर पर पेशानी रगड़ने की ज़रूरत नहीं।

ऐ गुलाम अगर तूने सिर्फ़ ज़बान से कलिमए शहादत अदा कर लिया है और दिल ने अमल के ज़रिए उसका असर अपने अन्दर नहीं लिया है तो समझ ले कि तू एक कदम भी खुदा की तरफ़ नहीं बढ़ा है। असली रवानगी तो दिल की रफ़्तार पर मौकूफ़ है, और असली नज़दीकी तो रूह की नज़दीकी का नाम है, अमल वह है जिसके अन्दर रूह यानी इख़्लास हो। यह इख़्लास जाहिरी आज़ा और शरीअत के शरीअत के हुदूद की हिफ़ाज़त किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता, यही उसकी कसौटी है जो अल्लाह तआला के नेक बन्दों की ख़िदमत किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता जो अपनी जाती ज़िन्दगी को बुजुर्गों की ज़िन्दगी के खिलाफ़ अपना अलग मेआर बनाए तो यह झूटी मेआर है।

लोगों को दिखाने की खातिर 'अमल' अमल नहीं है, आमाल तो तन्हाई में होते हैं लोगों के सामने तो सिर्फ़ वह



फराइज होते हैं जिनका ज़ाहिर करना ज़रूरी है। आमाल की बुनयाद तौहीद व इख़्नास है अगर तौहीद व इख़्नास नहीं तो आमाल की इमारत खोखली बुनयाद पर है, वह जल्द ज़मीन पर ढेर बन जाएगी। पहले इस बुनयाद को मज़बूत कर लो तो फिर अमल की बलन्द व बाला इमारत भी बनाना ठीक होगा। खुदा ने चाहा तो यह कभी नहीं गिरेगी, उसकी कुव्वत उसकी बुनयाद का राज़ है। तौहीद ही की वजह से तुम्हारा अमल सच्चाई के आसमान पर चाँद बन कर चमकने लगेगा और सूरज की तरह रोशनी देगा।

**सरकारे ग़ौसे आजम की तक़रीर बमक़ाम**

**मदरसा मामूरा में**

**19 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोजे**

**सहशम्बा (मंगल)**

रियाकार (दिखावे की नेकियाँ करने वाले) का ज़ाहिर तो साफ़ मगर दिल गन्दा होता है। वह शरई मुबाह चीज़ों से भी नफ़रत करता है, कस्बे हलाल से परहेज़ करता है, हाँ मज़हब को अपनी रोटि का ज़रिया बनाता है, उसकी हकीक़त अवाम की नज़रों से पोशीदा (छुपी हुई) होती है मगर ख़ास लोग उसको बराबर देखते रहते हैं, उसका सारा तक़्वा (परहेज़गारी) व फ़रमाबरदारी बनावटी होती है, उसका बातिन (यानी दिल के अन्दर की बात) ख़राब होता है।

अफ़सोसनाक होगा अगर तुम न समझो कि अल्लाह तआला की इताअत दिल से होती है नाकि जिस्म से। इबादत की यह सारी चीज़ें दिल से, बातिन से और माफ़ी से तअल्लुक रखती हैं तू इस ज़ाहिरी लिबासों की दौलत से अलग हो जा ताकि बातिनी नेमत के बेहतरीन लिबास से सरफ़राज़ हो जाए। इस मक्र के लिबास को उतार दे ताकि अल्लाह तआला तुझे हकीक़त का लिबास पहना दे और काहिली के लिबास को उतार दे यहाँ तक कि खुशामद और निफ़ाक (दिल में कुछ

जाहिर कुछ) के लिबास को भी उतार कर फेंक दे। इन ख्वाहिशों, गुरुरों और उज्ब (गुरुर की एक किस्म) और निफाक के चमकीले पोशाक को उतार कर जला दे ताकि तेरे लिए हकीकी महब्बत का उम्दा लिबास हकीकी अजमत का जन्नती लिबास अल्लाह तआला की तरफ से इनाम में मिल जाए।

गर्ज कि तू दुनिया का लिबास उतार दे और आखिरत का लिबास पहन ले। अपनी ताकत अपने वुजूद अपनी कुव्वत या मखलूक की कुव्वतों पर घमंड छोड़ दे। इस घमंड को छोड़कर उसके दरबार में आ जा तो तुझे उसकी बेशुमार मेहरबानियाँ अपनी आगोश में ले लेंगी। उसकी बेइन्तिहा रहमत तुझे अपने दामने करम में पनाह देगी बल्कि तू अपने वुजूद से भी हटकर अपने आका के सामने आ जा और जब तू उसका हो जाएगा तो वह तेरा हो जाएगा। उसकी वसीअ और बेशुमार रहमत व इनायत के साए में तेरी आरामगाह होगी। तेरे नफ़से शैतान के लिए वही दवा है, तेरी शिकस्तगी (ज़ख्म) के लिए वही मरहम है, तेरे हर दर्द का इलाज उसी के पास है, तेरे हर दुख को वही दूर कर सकता है, तू अपने को उसके लिए तोड़ेगा तो वही उसे जल्द जोड़ेगा, तू उसके लिए कट जाएगा यानी कुर्बान हो जाएगा तो आखिरकार वही तुझसे जुड़ जाएगा।

अब इससे बढ़ कर तेरे लिए कौन सी दौलत चाहिए जब वह तेरे टूटे को जोड़ेगा तेरे दर्द का खुद मुदावा (दर्द को ठीक करने वाला) होगा तो सारी दुनिया मिल कर भी तुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेगी अगर वह तेरा दोस्त हो जाएगा तो दुनिया की सारी बलाओं के मुकाबले में भी तेरे लिए पहरा रहेगा।

जो तौहीद को ज़िन्दा करके कमज़ोर मखलूक की नारवा महब्बत को फना कर देता है जो जुहद को ज़िन्दा करके दुनिया के लालच को मुर्दा करता है, अपने खालिक की रग़बत (चाहत) को अपने दिल में ज़िन्दा करके अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ को ठुकरा देता है तो वही है जो सलाहिडयत



(काबिलियत) की चोटी पर पहुँच गया, अपनी फ़लाह व कामरानी की ज़मानत हासिल कर ली, दीन व दुनिया की सआदतों को हासिल करने का राज़ उसने मालूम कर लिया। इसलिए ज़रूरी है कि तुम मौत आने से पहले यह मौत अपने ऊपर तारी कर लो जो कि नफ़्स की मौत है और हवस की मौत है तुम्हारे शैतान लईन की मौत है। यह खास मौत उस मौत के इलावा है जिसे आम बोलचाल में मौत कहते हैं आम मौत है यानी नफ़्स को मार देना एक खास मौत है जो नेकों के लिए बहुत बड़ी नेमत है।

ऐ कौम मेरे कहे को क़बूल कर लो क्योंकि मैं तुमको खुदा के रास्ते की तरफ़ बुला रहा हूँ, उसकी इताअत की दावत दे रहा हूँ मैं तुमको अपनी ज़ात की तरफ़ नहीं बुला रहा हूँ। मुनाफ़िक़ लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं बल्कि अपनी ज़ात की तरफ़ बुलाता है वह दुनिया का लालची है।

ऐ जाहिल तू बुजुर्गों की नसीहत से कान में रूई डाल लेता है क्योंकि तौहीद के घर में ठहरने से तुझे शर्म आती है हाँ मआज़ अल्लाह तू बुतख़ाना में बैठना चाहता है ताकि तू बुत पर अपनी ज़मीर की आज़ादी को भेंट चढ़ा दे मगर यह तेरे लिए हलाकत का सामान है। इसलिए मेरी हमदर्दानी नसीहत यह है कि तू बुजुर्गों की सुहबत इख़्तियार कर, अक्लमन्द पीर के नक्शेक़दम पर चल ख़बीस नफ़्स के फंदे से अपने गले को छुड़ा ले। कामिल मुशिदों का दामन मज़बूती से थाम ले।

हाँ अगर तुझमें कमाल पैदा हो जाए तो उनसे अलग अपनी एक मुस्तक़िल शान हासिल कर सकता है ताकि दूसरे दिलों के अन्धेरे में अपनी ताबनाकी (रोशनी) से उजाला पैदा करे तो तू इस काबिल बन जा कि दूसरों के कल्ब और रूह का भी इलाज कर दे।

अगर जुहद व तक्वा की तारीफ़ें सिर्फ़ ज़बान पर हों और दिल गुनाहों में मुबतला हो तो ऐसी सूरत में इन्सान जाहिरी मुसलमान है मगर बातिन में काफ़िर है? जाहिर में मुवहहिद

(अल्लाह को एक जानने वाला) है मगर बातिन में मुशरिक। मोमिन बातिन की तामीर से शुरूआत करता है तो फिर ज़ाहिर की तामीर करता है यानी पहले वह दिल से इबादत करता है फिर उसकी ज़ाहिरी इबादत या नेकी ज़ाहिर होती है जैसे कोई होशियार मुहन्दिस (बमअनी नक्शा या बिल्डिंग बनाने वाला) घर की तामीर उम्दगी से करता है तो फिर दरवाज़ा भी अच्छा बनाता है। तम्बीह : इस वाज़ की तफ़सील किसी अच्छे आलिमे दीन से इत्मिनान के साथ समझ लीजिए यहाँ हिन्दी में समझाना दुश्वार है।

## सरकारे गौसे आजम की तकरीर

### बमकाम मदरसए बग़दाद

#### 13 रजबुल मुरज्जब हिजरी 545 बरोज़ सहशम्बा

जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम की एक ख़ूबी यह है कि वह उन चीज़ों को छोड़ना सिखाता है जो बेमक़सद और बेमअना हैं --- जिस शख्स ने अपने अच्छे इस्लाम का सुबूत दिया वह मक़सद वाला काम करता है और ग़ैर मक़सद वाले कामों से दूर होता है क्योंकि जिन कामों का कोई उसूली मक़सद न हो वह बेकारों और लालचियों के कारोबार हैं। वह शख्स मौला तआला की खुशी से महरूम है जो ऐसे काम नहीं करता जिनका हुक्म दिया गया है और वह काम करता है जिनका हुक्म नहीं है। यह यकीनन महरूमी है बल्कि यह तो मौत है और एक किस्म की अपने रब के दर से दूरी है। दुनिया के कामों में मसरूफ़ियत के लिए नियत का ठीक होना शर्त है वरना तबाही है, पहले तो तुम दिल की सफ़ाई का काम करो क्योंकि यह तो फ़र्ज़ है फिर कहीं मअरिफ़त की तरफ़ जाना, अगर तुम जड़ ही खोदो तो भला डालियों से क्या मिलेगा? दिल तो नापाक हो और बदन पाक हो तो क्या फ़ायदा? बदन भी उसी वक़्त पाक होगा जबकि तुम कुआन व सुन्नत पर अमल करोगे, दिल महफ़ूज़ है तो बदन भी महफ़ूज़ रहेंगा।



बर्तन में जो होता है वही निकलता है, दिल में जो तुम्हारे होगा वही बदन से जारी होगा। होशियार! यह अमल उसका नहीं जो मौत का यकीन रखता है, यह अमल उसका नहीं जो अल्लाह तआला से मुलाकात करने पर ईमान रखता है और कियामत के दिन से डरता है। सही कल्ब तो वह है जिसके अन्दर तौहीद व तवक्कुल (अल्लाह तआला पर भरोसा) व यकीन व तौफीक व इल्म व ईमान व कुर्बे इलाही की शराब हो और सारी मखलूक से अपने आपको आजिज़ व जलील व फकीर समझे। इसके बावजूद एक छोटे बच्चे के मुकाबिल भी गुरुर न करे। जब कुफ़ार व मुनाफ़िकीन और खुदा के नाफरमानों से मुकाबला हो तो शेर की तरह डट जाए मगर रज़ाए इलाही के सामने कटे हुए गोश्त की तरह गिर जाए। नेक और परहेज़गार लोगों के सामने अपने को कमतर और जलील समझे। ऐसे ही लोगों की तारीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :- **أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رَحِيمَاءُ بَيْنَهُمْ** तर्जमा : काफ़िरों के मुकाबले में सख्त आपस में रहमदिल (पारा 26 रुकू 12)

मगर अफ़सोस है तुझ पर ऐ बिदअती खुदा के सिवा किसकी मजाल है कि अपने आपको खुदा और सारे जहान का रब कहे। हमारा रब बात करता है, वह गुंगा नहीं है, उसने मूसा से बातें की थीं। **وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْلِيمًا** (तर्जमा : और बेशक अल्लाह ने मूसा से गुफ़्तगू की) उसकी बात सुनी जाती है और समझी जाती है। उसने हज़रते मूसा से कहा था **يَا مُوسَى إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ** (तर्जमा : ऐ मूसा मैं अल्लाह हूँ सारे जहान का पालने वाला) यानी अल्लाह ने यह बतला दिया कि यह न समझो कि मैं कोई फ़िरिश्ता हूँ या जिन्न हूँ या आदमी हूँ नहीं नहीं मैं सारे जहान का मालिक हूँ गोया अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को झुटलाया जिसने कहा था **أَنَا رَبُّكُمْ الْأَعْلَى** (तर्जमा : मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ) मेरे सिवा कोई खुदा नहीं। ----- इसलिए खुदा ने मूसा को बता दिया कि मैं खुदा हूँ फ़िरऔन हरगिज़ खुदा नहीं है, न ही कोई और खुदा है।

----- हज़रते मूसा अल्लाह तआला की यह सुन रहे थे और उनको बड़ी परेशानी थी क्योंकि उस वक़्त अन्धेरी रात थी फ़िक्रों का हुजूम था, एक तरफ़ हामिला बीवी बच्चे की पैदाइश के दर्द में मुब्तला है मगर उस तारीकी में ऐ नूर ज़ाहिर हुआ जो अल्लाह तआला ने ज़ाहिर फ़रमाया था। उन्होंने अपनी शरीके हयात यानी बीवी को सामान समेत वहीं ठहरा दिया। यह कहते हुए कि اِنِّى اَنْتُ نَارًا (तर्जमा : ज़रा ठहरो मुझे आग नज़र आ रही है) मुझे एक रोशनी दिखाई दे रही है वह रोशनी जो मेरे दिल में मेरी रूह में मेरी रूह की गहराई में असर कर रही है, मेरे अन्दर हिदायत की चमक पैदा कर रही है जिसकी वजह से मैं सारी दुनिया से मुस्तग़नी (लापरवाह होने वाला) हो रहा हूँ। यह मेरे लिए विलायत व ख़िलाफ़त का पैग़ाम है इसमें मेरे लिए असली ज़िन्दगी है जिसने मेरी फ़रई ज़िन्दगी (यानी दुनियावी ज़िन्दगी) को रुख़सत कर दिया है, उसने मुझे वह हुक्म दिया जिसने मुझे महकूमी से बेपरवाह कर दिया, अब ख़ौफ़ मेरे दिल से रुख़सत हो रहा है, अब यही ख़ौफ़ मेरे दुश्मन (फ़िरऔन) के दिल में घर कर लेगा। हज़रते मूसा ने यह कहा और अपनी बीवी को रब की हिफ़ाज़त में दे कर आगे बढ़ गए, यकीनन इसका नतीजा यह हुआ कि रब ही ने उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। इसी तरह मोमिन जब अल्लाह के करीब होना चाहता है और खुदा उसको अपने करीब आने की दावत देता है तो वह चौकन्ना हो कर चारों तरफ़ देखने लगता है उसकी ज़ाहिरी नज़रों में ऐसा दिखाई देता है कि हर سمت बन्द है बस एक سمت खुली है जो उसके मौला तआला की है। वह मोमिन बन्दा अपने ज़ाहिरी तअल्लुकात की शरीके ज़िन्दगी से मुखातब होकर कहता है اِنِّى اَنْتُ نَارًا (तर्जमा : देखो वह मुझे रोशनी नज़र आ रही है) अब मैं उधर जा रहा हूँ तुम्हारा खुदा हाफ़िज़ अगर है किसमत में लौटना तो लौट ही आऊँगा वरना तुम इधर और हम उधर। इस तरह वह दुनिया व माफ़िहा यानी अल्लाह के सिवा जो कुछ दुनिया



में है उसको रुखसत कर देता है, मसनूआत (बनाई हुई चीजों) को छोड़ कर वह सानेअ (यानी बनाने वाले) के दरे फैज़ की तरफ लपक जाता है। अब जब वह मिल जाता है तो सब कुछ मिल जाता है। बीबी भी बच्चे भी माल व असबाब भी सब महफूज़ हो जाते हैं। अहवाल की बातें दूर वालों से छुपाई जाती हैं नज़दीक वालों से नहीं छुपाई जाती हैं, दोस्तों से नहीं दुश्मनों से छुपाई जाती है, खास लोगों से नहीं आम लोगों से छुपाई जाती है। यह दिल तो वह है कि जब इसके अन्दर सेहत व सफाई पैदा की जाती है तो चारों तरफ से अल्लाह तआला ही की बातें उसके कानों में आने लगती हैं, हर नबी हर वली हर सिद्दीक की आवाज़ें उसे सुनाई देने लगती हैं, उस वक़्त वह अल्लाह तआला से करीब हो जाता है उस बन्दे के हक़ में अल्लाह तआला की नज़दीकी ज़िन्दगी है अल्लाह तआला से दूरी मौत है, मुनाजात में उस मोमिन बन्दे को सुकून मिलता है और अल्लाह तआला की याद में उस मोमिन बन्दे को खुशी हासिल होती है, दुनिया उसके हाथ से निकल जाए उसकी बला से भूक प्यास और दुनिया की सख़्तियाँ अपनी डरावनी शक्ल उसके आगे पेश करें वह ख़ौफ़ज़दा नहीं होता है वह मुरीद (मुराद को पहुँचने वाला) है उसकी खुशी की पूंजी फ़रमाबरदारी है वह आरिफ़ है और उस मोमिन बन्दे की मुराद उसके करीब है यानी अल्लाह तआला की ज़ात उससे करीब है। एक मोमिन बन्दे को इससे बढ़कर और क्या चाहिए।

मगर तू ऐ बनावटी शैख़ क्या ये नेमत तुझे हासिल है क्या दिन भर रोज़ा रख लेने रात भर नमाज़ें पढ़ लेने सूफ़ियों का लिबास पहन लेने से तुझे यह दर्जा हासिल होगा? यह दर्जा तुझे कहाँ से हासिल होगा जबकि तूने अपने नफ़्स व हवस ही को नहीं ठुकराया अपनी तबीयत और आदत को तूने लगाम नहीं दी।

जहालत व मख़लूक की सोहबत ही में रहा, नहीं यह नेमत तेरे लिए नहीं है लेकिन अगर लेना है तो तौबा कर ले, खुलूस व सिद्क़ को दावत दे तुझे भी रुतबा मिल जाएगा,

कुर्ब व विसाल की दौलत से तू भी मालामाल हो जाएगा यानी अल्लाह तआला की नज़दीकी तुझे हासिल होगी, हिम्मत बलन्द कर ले बलन्दी तेरा इन्तेज़ार कर रही है, इस्लाम पैदा कर ले सलामती तेरी आगोश में है, तू अल्लाह से राज़ी हो जा वह भी तुझसे राज़ी हो जाएगा, काम शुरू करना बस तेरा काम है उस काम को पूरा कर देना अल्लाह तआला का काम है।

ऐ अल्लाह! तू दुनिया व अख़िरत में हमारा कारसाज़ हो जा, हम को अपनी मख़लूक के हाथ में न दे, अपने हाथ में रख ले, खुद हमको हमारे हाथ से बचा।

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है अल्लाह तआला जिब्रील अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है फ़लों आदमी को आराम से सुला दो फ़लों शख्स को उठा दो किसको? उसको जिसने महब्बत का दावा किया है अब मेरा उससे मुकाबला है मैं उसको आजमाऊँगा उसको चैन नहीं लेने दूँगा। सुला दो उसको जिसने मेरी महब्बत का सुबूत दे दिया उसने पूरी मेहनत उठाई अब उसके दिल में मेरे सिवा किसी का वुजूद नहीं उसकी दोस्ती मुझसे मुत्तहिद (मिल गई है) हो गई वह अपनी वफ़ादारी में पक्का निकला अब वह मेरे घर में मेहमान है मेरा काम है उसकी ख़ातिर करना, मेहमान को कोई तकलीफ़ नहीं दी जाती है वह मेरी मेहरबानी के गहवारे में सोएगा, मेरे फज़ल के दसतरख़्वान पर से नमतें खाएगा मेरे उन्स (महब्बत) के करीब होगा, ग़ैर की नज़रों से उसको छुपाया जाएगा वह सच्चा महबूब जिसने महब्बत को सच कर दिखाया उसकी तकलीफ़ दूर होगी।

दुश्मन की आवाज़ से मुझे नफरत है दोस्त की आवाज़ मेरे लिए नग़मए शीरी है कौन है यह दोस्त जिसने दिल को साफ़ कर लिया अल्लाह के सिवा अपने दिल से हर एक को आज़ाद कर दिया यानी सिर्फ़ अल्लाह का होकर रहा और दुनिया से आज़ाद हो गया। उसी से तौहीद व तवक्कुल व मअरिफ़त में कमाल पैदा होता है और वही दोस्त हो जाता है



उसी को शिफा हासिल होती है हर मर्ज से। कोई शख्स जो दुनिया के किसी बादशाह का दोस्त बन गया तो क्या क्या तकलीफें उसके मिलने के लिए उठाता है। उसके लिए घर छोड़ कर निकल जाएगा ताकि उसके शहर को पहुँचे, दिन को दिन रात को रात नहीं समझेगा और चलता ही रहेगा यहाँ तक कि उसके घर पहुँच जाएगा। उसके बगैर उसे खाना पीना अच्छा न लगे। इधर बादशाह को भी उसके हाल से खबर मिलती है कि फलों शख्स दूर से यहाँ आ रहा है तो वह क्या करता है? अपने खादिमों को उसके इस्तिकबाल के लिए भेजता है, खुशआमदीद कहते हुए उसे महल में लाया जाता है उस शख्स को बादशाह बैठने का हुक्म देता है फिर बादशाह उससे मीठी मीठी बातें करता है मिजाज पूछता है, बादशाह हसीन व जमील लौंडियाँ उसके निकाह में देता है मुल्क का एक हिस्सा इनाम में देता है। अब क्या उसका खौफ या थकान बाकी रहेगी, क्या अपने वतन को लौटने की धुन रहेगी ऐसे नेमत वाले की जुदाई वह शख्स कैसे चाहेगा। उस बादशाह के पास तो वह शख्स अब मकीन व अमीन का रुतबा हासिल कर चुका है, वैसे ही वह तुम्हारा दिल है जो आशिक का रुतबा हासिल कर चुका है और खुदा को तलब करते हुए आगे बढ़ रहा है। जब वह बन्दा अल्लाह तआला से विसाल हासिल कर लेता है तो उस बन्दे को इतना मिल जाता है कि अब उसे अपने देश में वापस लौटने की कोई तमन्ना और फिक्र नहीं रहती। -----

आशिक का इस रुतबे तक पहुँचना फर्ज की अदायगी के बगैर मुमकिन नहीं न हराम से परहेज के बिना मुमकिन है बल्कि आशिक के लिए तो उन मुबाहात को भी तर्क करना होगा जो हवा व हवस के दाएरे में हैं और अपने वुजूद से भी दस्तबरदार होना पड़ेगा। गर्ज यह कि जुहद व तक्वा इख्तियार करना होगा, अल्लाह के सिवा सब कुछ तर्क करना होगा, नफ्स की मुखालफत करनी होगी शैतान से मुकाबला कर के इस इम्तेहान में कामयाब होना होगा और मखलूक की महब्बत से दिल को

खाली करना होगा। उस दर्जे पर पहुँच जाना होगा जहाँ अच्छाई और बुराई एक हो जायें यानी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई करे या बुराई मगर तुम्हें कोई ग़म और फ़िक्र बिल्कुल न हो। मख़लूक के मना और अता एक हो जायें सोना और पत्थर एक हो नज़र से देखा जाए जिसका दिल सही हो गया उसके लिए हीरा और कंकर एक हो हैं। दुनिया की खुशानसीबी और बदनसीबी उसके पास एक ही लाइन पर हैं जिसको यह कमाल हासिल हो गया उसका दुश्मन ज़ेर हो गया दुनिया और दुनिया वाले उसकी नज़र में हेच हो गए फिर आख़िरत और आख़िरत वाले उस आशिक की नज़रों में अच्छा लगने लगे मगर उसके बाद तो वह दर्जा आता है कि आख़िरत भी उसकी नज़र में हेच हो जाती है। उसके दिल में सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह रह जाता है। इस तरह वह मख़लूक की सफ़ों को चीरता हुआ अपने मौला तक पहुँच जाता है और ये सफ़ें उसे रास्ता भी दे देती हैं, वह उसकी सिद्क की आग और बातिन की हैबत से भाग जाते हैं जिसके अन्दर यह बात ज़म गई तो फिर कोई उसकी तरक्की को रोक नहीं सकता उसका झंडा नीचा नहीं हो सकता उसकी फ़ौज शिकस्त नहीं खा सकती।

वह आशिक एक ऐसा परिन्दा है जो हमेशा चहचहाता रहेगा वह आशिक एक शमशीर का मालिक है जो कुन्द नहीं होगा, उसके इख़्नास के क़दम थकने का नाम नहीं लेते, उसका मक़सद अटल है, उसके महबूब यानी अल्लाह तआला के दरवाज़े पर कोई उसको कोई रोकने वाला नहीं, वहाँ कोई रुकावट उस आशिक के लिए नहीं दरवाज़े खुद ब खुद उस आशिक के लिए खुल जाते हैं। इस तरह अल्लाह तआला और उस आशिक के दरमियान कोई चीज़ आड़ नहीं बन सकती है न बनेगी। अल्लाह तआला उसको अपनी महबूबत की गोद में सुलाएगा और वहाँ उसको आराम मिलेगा। वह बन्दा अल्लाह तआला के फज़ल व करम का मेहमान है, खुदा के उस बन्दे के आराम के लिए खाने पीने की वह नेमतें हाज़िर हैं कि

لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ شَيْءٍ

तर्जमा : जिन नेमतों को न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना न उनका तसव्वुर किसी इन्सानी दिल पर आया।

ऐसा बन्दा फिर मखलूक की तरफ लौटेगा तो अल्लाह तआला के बन्दों को सीधा रास्ता बताने की गरज़ से ताकि दूसरे को भी उस दर तक ले आ सके और उस दरबार का कासिद बन कर उनकी रहनुमाई का फर्ज अन्जाम दे।

इस तरह आलमे मलकूत यानी फिरिश्तों का आलम में खुदा के उस खास बन्दे का डंका बज जाता है। उसके दिल की हुकूमत के साए में सारा जहान आ जाता है मगर ऐ बनावटी तू विलायत की झूटी शेखी बघार रहा है अभी तो तेरे दिल पर नफ़्स छाया हुआ है मखलूक छाई हुई है दुनिया का तुझ पर कब्ज़ा है और तुझे अल्लाह की याद से ज़्यादा हैं दुनिया की फ़िक्रें तुझे घेरे हैं। अभी तू उन बुजुर्गों की सफ़ा में नहीं आ सकता, अगर वाकई तेरा दिल उस रुत्बे पर आना चाहता है तो आ मगर पहले दिल को पाक व साफ़ कर ले। अल्लाह के सिवा सब को अपने दिल व दिमाग से निकाल दे रब के हुक्म के सामने अपनी गर्दन झुका दे तकदीरे इलाही के आगे हथियार रख दे उसके बाद आ जा अब तू मुझसे मुँह लगाने के काबिल है तुझे मालूम हो जाएगा कि वहाँ क्या बात है जब तू ऐसा करेगा तो तेरे मन की मुराद मिल जाएगी इससे पहले की तेरी सब बातें बकवास हैं।

मगर अफ़सोस तेरी तो यह हालत है कि ज़रा ज़रा सी बातें तुझे नराज़ कर देती हैं तू आपे से बाहर हो जाता है तुझको अपने आप पर काबू नहीं रहता। एक लुकमा तेरा कम हो जाए एक पैसा तेरा गुम हो जाए तेरी झूटी इज़्ज़त में ज़रा सा धब्बा आ जाए तो तेरे होश ठिकाने नहीं रहते, गुस्से से तेरे मुँह में झाग आने लगते हैं कभी वीवी पर हाथ चलाने लगता है कभी बेटे पर, कभी तू मजहब को बुरा कहने लगता



है (अल्लाह की पनाह) तो कभी बानीए मजहब पर तोहमत लगाने लगता है --- अगर तुझे होश होता और तेरे हवास दुरुस्त होते तो क्या ऐसे पागलपन की हरकतें करता नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि तू तो अल्लाह तआला के आगे अपने को गुमसुम पाता अल्लाह तआला के कामों को अपने हक में नेमत समझता कोई झगड़ा न करता। बजाए मोमिन होने के काफिर न बनो ताकि शुक्रगुज़ार हो नाराज़ होने की जगह अल्लाह तआला के हुक्म पर राज़ी हो, और अल्लाह तआला की बारगाह में तेरे लबों आह व फुर्गों की खामोशी की मोहर होनी चाहिए तुझे तो कहा गया है कि **الَّيْسَ لِلَّهِ بَكَافٍ عَبْدٌ** (तर्जमा : क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है) ऐ जल्दबाज़ सब्र कर तुझे वह मिलेगा कि तू हैरान रह जाएगा तू क्या जानता है अल्लाह को अगर जानता होता तो यूँ गिले शिकवे न करता ---- अगर अल्लाह तआला को जानता होता तो उसके सामने तू गूंगा बहरा बन जाता --- तड़प तड़प के मांगना तो अलग बात है मांगता ही नहीं, और मांगने की तुझे ज़रूरत क्या है तुझे तो बस सब्र करना चाहिए और होश में रहना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला का कोई काम हिकमत और मसलेहत से ख़ाली नहीं वह तो तुझे तपा तपा कर देख रहा है कि तू ख़रो है भी या नहीं वह देख रहा है कि तुझे उसके वुजूद का उसकी नज़रों का यकीन है भी या नहीं तुझे मालूम नहीं कि मजदूर अगर बादशाह के घर में काम कर रहा है तो उसका काम करके मजदूरी मांगना बड़ी बेवकूफी है बल्कि अगर ऐसा करेगा तो हो सकता है कि महल से बाहर कर दिया जाए क्योंकि उसे मांगने की ज़रूरत ही क्या है बादशाह को खुद ही ख़याल है। मोमिन का ईमान जभी कामिल होता है जबकि मोमिन के दिल में लालच की आग बुझ जाए मखलूक से खौफ़ और उम्मीद खत्म हो जाए उसके लिए हमेशा की फ़िक्र और उसूल व फुरअ पर नज़र रखने की ज़रूरत है।

अम्बियाए किराम और नेक लोगों के हालात मालूम करने से मालूम होगा कि खुदाए तआला ने किस तरह अपने खास बन्दों को दुश्मनों के चंगुल से छुटकारा दिया। किस तरह गैबी मदद फरमा कर अपने प्यारों की जिन्दगी को संवार दिया सही गौर व फिक्र से तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) भी सही होता है और दुनिया दिल से निकल जाती है। जिन्न व इन्सान और फिरिश्ते सब भूल जाते हैं सिर्फ खुदा की याद दिल में आ जाती है और कल्ब ऐसा बन जाता है गोया कि उसके सिवा कोई मखलूक ही नहीं गोया सारी मखलूक में से वही इताअत-पर मामूर है उसी पर अल्लाह तआला के इनामात हुए हैं और सारी तकलीफों का बोझ उसी की गर्दन पर है। मुज्तलिफ किस्म की तकलीफों और पहाड़ों जैसी मुसीबतों को खुदावन्द कुद्स का पैग़ाम समझ कर वह इन्सान उठा लेता है। इस तरह अपनी सच्ची बन्दगी का सुबूत देता है मखलूक का बार उठा लेता है खुदा उसका बार उठा लेता है। वह इन्सान मखलूक का तबीब बनता है खुदाए तआला उस इन्सान का तबीब बनता है। वह इन्सान मखलूक को खुदा के दर तक पहुँचाने के लिए रहबर बन जाता है। वह इन्सान ऐसा सूरज बन जाता है जिससे उस राह के सब सितारे रौशनी हासिल करते हैं। वह इन्सान मखलूक का आबो दाना हो जाता है यानी इन्सान अपनी ज़रूरियात उस बन्दए खुदा से हासिल करते हैं और अल्लाह तआला के उस खास बन्दे से अलग नहीं होते उस खास बन्दे की सारी तवज्जो मखलूक के फायदे पर खर्च होती है। वह खास बन्दा अपनी ज़ात को भूला देता है गोया उसकी ज़ात ही नहीं। इस राह में वह खाना पीना भूल जाता है यहाँ तक कि वह अपने नफ्स को भूल जाता है उसकी सारी कोशिश मखलूक को नफा पहुँचाने के लिए होती है उसने अपनी ज़ात को कज़ाए इलाही के हाथों सौंप दिया और अपनी ज़ात से अलग थलग हो गया।

यह है तारीफ़ उस काएद (रहनुमा) की जो दरे हक तक मखलूक को ले आने का फर्ज अन्जाम देता है मगर तू ऐ

लालची अल्लाह से नावाकिफ उसके रसूलों से नावाकिफ, उसके वलियों के मरतबों को भूला हुआ मखलूक की हकीकत से बेखबर और इस पर नेक होने का दावेदार है। हालांकि दिल में दुनिया भर की लालच का अम्बार लगा हुआ है तेरा यह जुहद (नेकी) लंगड़ा है उसके पांव नहीं है। तुझे शौक तो सारी दुनिया का है या मखलूक का है तुझे रब से मिलने का शौक ही कब है। थोड़ी देर मेरे पास अच्छे ख्याल व अदब के साथ ठहर तो सही तो मैं बतला दूँ तुझे कि रब का रास्ता कौन सा है। उतार फेंक यह शेखी का लिबास। वह लिबास पहन जिस में शान न नज़र आए। ज़लील बन तो इज़्ज़त मिलेगी नीचे उतर तो तू ऊपर किया जाएगा जिस हालत में कि तू है वह तो सरापा हवस है। इस तरह तो अल्लाह तआला की नज़र ही नहीं पड़ती। यह बलन्द रुतबा सिर्फ दुनिया में डूबने से नहीं मिल सकता इसीलिए तो रूहानी आमाल की ज़रूरत है फिर कहीं जिस्म के काम की ज़रूरत पड़ती है।

हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं जुहद यहाँ है तकवा यहाँ है इखलास यहाँ है। (यह अपने सीने की तरफ इशारा करते हुए फरमाया)

जो कामयाबी चाहता है उसको मशाइख के कदमों तले खाक बनना चाहिए मगर कौन से मशाइख जो तारिके दुनिया और मखलूक को छोड़ने वाला हो जिन्होंने अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक सारी कायनात को अलविदा कह दिया हो कौन हैं जिन्होंने अपनी ज़ात और अपने वुजूद को भी अलविदा कह दिया हो। अब हर हाल में उनका वुजूद अल्लाह तआला के साथ है जो शख्स रब को तलब करता है और जो अपनी ज़ात का भी तालिब है वह दो टकराने वाली चीज़ों को तलब करता है जो सरासर बेवकूफी है।

बनावटी जाहिद अकसर व बेशतर तो वह हैं जो मखलूक के पुजारी हैं उन्हें मुशरिक कहना ठीक है। असबाब पर भरोसा करना मखलूक पर सारा एतिमाद रखना क्या है? शिर्क ही तो



है यही तो खुदा के ग़ज़ब का निशाना बनाता है मुसब्बेबुल असबाब यानी अल्लाह तआला पर तुम्हारी नज़र नहीं जो इन सारे असबाब की चोटी अपने कब्जे में रखता है और उसका खालिक है जो किताब व सुन्नत को मानते हैं उनका एतिकाद तो यह है कि तलवार भी खुद से काटने वाली नहीं है आग भी खुद से जलाने वाली नहीं बल्कि खुदा ने यह सिफ़त उसके अन्दर रखी है खाना पेट नहीं भरता बल्कि खुदा के हुक्म से पेट भरता है पानी प्यास नहीं बुझाता बल्कि खुदा का हुक्म तुम्हारी प्यास बुझाता है। इस तरह सारे असबाब हैं ज़ात व हकीकत सबकी अलग अलग है मगर असली तसरूफ़ सबके अन्दर खुदाए तआला का है यह चीज़ें वसीले हैं जो अल्लाह तआला के कब्जे में हैं। हकीकत में तसरूफ़ फरमाने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है फिर तुम्हारा इधर उधर देखना बेकार है किसी दूसरे को हाजतरवा समझना या किसी और को मुल्जिम ठहराना बातिल है यानी हर काम अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है। तौहीद इसी का नाम है कि हर चीज़ में उसी को मुख्तार माना जाए। यह इतनी खुली बात है कि हर अक्लमन्द इस बात से इत्तेफ़ाक़ किए हुए है। मसल मशहूर है अक्लमन्द को इशारा काफी है और बेवक़ूफ़ को लाठी से समझाने की ज़रूरत है।

बहरहाल इताअत करो कि इसी में इज़्ज़त है नाफ़रमानी छोड़ो कि इस में ज़िल्लत है नुसरत व मदद वही अल्लाह तआला ही करता है, रुसवा व नामुराद वही करता है

وَتَعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتَذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ط

तर्जमा : और (अल्लाह) जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे -- पारा 3 रुकू ॥) --- वह कुर्ब अता करता है तो इज़्ज़त होती है दूर करता है तो ज़िल्लत हो जाती है।

नोट : हुजूर ग़ौसे पाक की तालीमात और तक़रीरों को किसी अच्छे आलिम से समझ लें। हिन्दी वालों को समझाना बड़ा मुश्किल है।

## 1- वअज मोरिखा 3 शव्वाल 545हि०

नज़ले तक्दीर के वक्त हक़ तआला शानह पर एत्राज़ करना मौत है दीन की, मौत है तोहीद की, मौत है तवक्कुल व इख़्लास की, ईमान व अलक़ल्ब लफ़ज़ “क्यों” और “किस तरह” को नहीं जानता। वो नहीं जानता के “बल्के” क्या है। उसका कोल तो “हाँ” है ( के हुक्म तक्दीरी की मुवाफ़क़त करता है और चूं व चरा के साथ राय ज़नी नहीं करता ) नफ़्स की आदत ही है के मुख़ालफ़त व तज़ाअ करे। पस जो शख़्स उसकी दुरुस्ती चाहे वो उसको इतना मुजाहेदह में डाले के उसके शर से बे ख़त्र बन जाए। नफ़्स तो शर ही शर है मगर जब मुजाहेदे में पड़ता और मुतमईन्ना बन जाता है तो ख़ैर ही ख़ैर हो जाता है औ तमाम ताक़तों को बजा लाने और मअसीयतों के छोड़ देने में मुवाफ़क़त करने लगता है पस उस वक्त इर्शाद होता है के “ऐ इतमिनान वाले नफ़्स! लौट अपने रब की तरफ़ के तू उससे खुश और वो तुझ से खुश।” अब उसका जोश भी फ़सीह और उसका शर भी उससे ज़ायल हो जाता है और मख़्लूक़ात में से किसी शै के साथ भी वो लगाओ नहीं रखता। और उसका नसब अपने बाप इब्राहीम ( अ०स० ) के साथ सही बन जाता है क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम अपने नफ़्स से बाहर निकल गए और बिला ख़्वाहिश नफ़्स बाकी रह गए। और आपका क़ल्ब साहिबे सकून था ( नारे नमरूदी में गिरने के वक्त ) आपके पास तरह तरह की मख़्लूक़ात आई और उन्होंने आपकी मदद करने के लिए अपने अपने नफ़्सों को पेश किया। और आप फरमा रहे थे के मुझे तुम्हारी मदद दरकार नहीं। वो मेरे हाल से वाकिफ़ है और इसलिए मुझे सवाल की भी हाजत नहीं।” जब शाने तसलीम व तवक्कुल सही हुई तो आग से कह दिया गया के हो जा ठंडी और सलामती

वाली इब्राहीम पर। जो शख्स हक़ तआला के साथ उसकी कद्र पर राजी बन कर सब इख्तियार करता है उसके लिए दुनिया में खुदा की बेशुमार मदद है।

आखिरत में बेशुमार नअमत। अल्लाह तआला फरमाता है के सब करने वालों को उनका पूरा अज़्र बेशुबार दिया जाएगा। अल्लाह पाक से कोई चीज़ पौशीदा नहीं है उसकी नज़र के सामने से जो कुछ भी बर्दाश्त करने वाले उसकी वजह से बर्दाश्त करते हैं। उसके साथ एक साअत के लिए सब करो तो बरसहा बरस उसके लुत्फो इनआम को देखते रहोगे। एक साअत का सब ही तो शुजाअत है बेशक अल्लाह सब करने वालों का साथी है। मदद करने और कामयाब बनाने में उसके साथ बाइसतक़बाल रहो और उसके लिए बेदार हो जाओ और उससे गाफिल मत होओ अपने बेदार होने को मौत के बाद के लिए ना छोड़ो के उस वक्त बेदार होना तुम को मुफीद ना होगा। उसके लिए बेदार बनो, उससे मिलने से क़ब्ल बेदार बनो। अपने इख्तियारी बेदार होने से क़ब्ल वरना पशेमान होओगे। ऐसे वक्त के पशेमानी तुम को मुफीद ना होगी और अपने क़लूब की इसलाह कर लो। क्योंकि क़लूब ही ऐसी चीज़ हैं के जब वो संवर जाते हैं, तो सारे हालात संवर जाते हैं। और इसी लिए जनाब रसूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के डब्बे आदम में एक गोश्त का टुकड़ा है के जब वो संवर जाता है तो उसकी वजह से सारा बदन संवर जाता है और जब वही बिगड़ जाता है तो सारा बदन बिगड़ जाता है और वो क़ल्ब है। क़ल्ब का संवरना, परहेज़गारी, हक़ तआला पर तवक्कुल उसकी तोहीद और आमाल में इख़्लास पैदा करने से है और उसका बिगड़ना उन ख़सलतों के मअदूम होने से क़ल्ब गोया परिन्दा है। बदन के पिंजरे में गोया मोती है। डब्बे में गोया माल है



संदूक में पस ऐतबार परिन्दे का है पिंजरे का नहीं है।  
 ऐतबार मोती है डब्बे का नहीं है और माल का है संदूक  
 का नहीं है। ऐ मेरे अल्लाह! मेरे आज्ञा का अपनी ताअत  
 में और क़ल्ब को अपनी मअरफ़त में मशग़ल फरमा। और  
 मुदत-उल-उम्र सारी रात और सारे दिन इसी में मशग़ल  
 रख और हम को शामिल फरमा नैकू कार असलाफ़ के  
 साथ और हमको नसीब फरमा जो उनको नसीब फरमाया  
 था और हमारा हो जा, जैसा के उनका हो गया था।

## वअज़ मोरिख़ा 2 ज़िक़अद 545हि०

साहबज़ादा! हक़ तआला के लिए तेरी इरादत सही  
 नहीं हुई और ना तू उसका तालिब है क्योंकि जो शख्स  
 दअवा करे हक़ तआला को मतलूब समझने का और  
 तलब करे ग़ैर को तो उसका दअवा बातिल है। तालिबाने  
 दुनिया की कसरत है और तालिबाने आख़िरत की क़िल्लत  
 है और तालिबाने हक़ और उसकी इरादत में सच्चे तो  
 बहुत ही कम हैं के कमयाबी नायाबी में क़िब्रीयत अहमर  
 जैसे हैं, इस दर्जा शज़ोनादिर हैं के एक आध ही पाया  
 जाता है। वो कुंबों क़बीलों में से एक एक दो दो हैं। वो  
 मअदुन हैं ज़मीन में, बादशाह हैं ज़मीन के। कोतवाल हैं  
 शहरों और बाशिंदों के, उनके तुफ़ेल मख़्लूक़ से बलायें  
 दूर हाती हैं और उन पर बारिशें बरसती हैं। उनकी बर्क़त  
 से हक़ तआला आसमानों से पानी बरसाता है उनकी वजह  
 से रोईदगी लाती है। वो अपने इब्तिदाए हाल में भागते  
 फिरते हैं एक पहाड़ की चोटी से दूसरी चोटी पर। एक  
 शहर से दूसरे शहर की तरफ़ और एक वीराना से दूसरे  
 वीराना की जानिब। जब किसी जगह पर पहचान लिए  
 जाते हैं तो वहाँ से चल देते हैं। सबको अपनी पीठ के  
 पीछे फँकते, दुनिया की कुंजियाँ अहले दुनिया के हवाले  
 करते और बराबर इसी हालत पर कायम रहते हैं यहाँ

तक के उनके गिर्द क़िलअे तामीर कर दिए जाते हैं ( के  
 कहीं नहीं जा सकते ) नहरें उनके क़लूब की तरफ बहने  
 लगती हैं और हक़ तआला की तरफ से लश्कर उनके इर्द  
 गिर्द फैल जाता है। और एक की जुदा हिफाज़त की जाती  
 है। सबका अज़ाज़ किया जाता है और निगहबानी होती  
 है और उनको मख़्लूक़ पर हाकिम बनाया जाता है। ये  
 सारी बातें आम अक्लों से बाहर हैं पस उस वक़्त उनको  
 मख़्लूक़ पर तवज्जह करना फ़र्ज़ बन जाता है वो तबीबों  
 जैसे होते हैं और सारी मख़्लूक़ बीमारों जैसी। तुझ पर  
 अफ़सोस! दअवे करता है के तू भी उनमें से है पस बता  
 के उनकी कौन सी अलामत तुझ में मौजूद है हक़ तआला  
 के कुर्ब और उसके लुत्फ़ की क्या निशानी है? तू खुदा  
 के नज़दीक किस मर्तबे और किस मुक़ाम में है। मलकूत  
 आला में तेरा नाम और लक़ब क्या है। हर शब को तेरा  
 दरवाज़ा किस हालत पर बन्द किया जाता है? तेरा खाना  
 और पीना मुबाह है या हलाल ख़ालिस? तेरी ख़्वाबगाह  
 दुनिया है या आख़िरत या कुर्बे हक़ तआला? तनहाई में  
 तेरा अनीस कौन है? ख़लवत में तेरा हम नशीन कौन है?  
 ऐ दरोग़ गो! तनहाई में तो तेरा अनीस तेरा नफीस और  
 शैतान और ख़्वाहिश और दुनिया के तफक्कुरात हैं और  
 जलवत में शयातीन-उल-अनस हैं जो बदतरीन हम नशीन  
 और फज़ल बकवास वाले हैं ये बात बकवास और महेज़  
 दाअवे से नहीं आती। उसमें तेरी गुफ़्तगू महेज़ हवस है जो  
 तुझ को मुफीद नहीं लाज़िम पकड़ सकून और गुमनामी  
 को हक़ तआला के हुज़र में और बे अदबी से एहत्राज़,  
 और अगर उसमें तेरा बोलना ज़रूरी हो तो हक़ तआला  
 के ज़िक्र से और अहले अल्लाह के ज़िक्र से बर्क़त हासिल  
 करने के लिए होना चाहिए, ना इस तरह के तू उसका  
 मुद्ई बन जाए अपने ज़ाहिर से हालाँकि तेरा क़ल्ब उससे

खाली है। हर ज़ाहिर के बातिन उसके मवाफिक़ ना हो हज़ियान है। क्या तूने जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का इशारा नहीं सुना के जो शख्स (गीबत करके) दिन भर लोगों के गोश्त खाता रहा उसका रोज़ह नहीं हुआ आपने बयान फरमा दिया के खाना पीना और इफ़्तार करने वाली चीज़ों ही के छोड़ने का नाम रोज़ह नहीं है बल्के उसके साथ गुनाहों को छोड़ने का भी इज़ाफ़ा करना चाहिए। पस बचो गीबत से के वो नेकियों को इस तरह खा लेती है जैसे आग सूखी लकड़ियों को खा लेती है। जिस शख्स की तकदीर में फलाह है वो उसकी आदत कभी नहीं डालता और जो गीबत में मशहूर हो जाता है उसकी लोगों में हुर्मत कम हो जाती है और बचो शहेवत के साथ निगाह करने से के वो तुम्हारे क़लूब में मअसीयत का बीज बो देगी और उसका अंजाम दुनिया में अच्छा है ना आखिरत में। और बचो झूटी क़सम खाने से के वो आबाद शहरों को चटयल बयाबान बना छोड़ती है के माल और दीन दोनों की बर्क़त ले जाती है। तुझ पर अफ़सोस के अपनी तिजारत को झूटी क़सम से रिवाज देता और अपने दीन का ख़सारा उठाता है। अगर तुझे अक्ल होती तो जानता के अस्ल ख़सारा यही है। तू कहता है के खुदा की क़सम! इस जैसा माल शहर भर में कहीं नहीं और ना किसी के पास मौजूद है। खुदा की क़सम! ये इतने का है और खुदा की क़सम! मुझ को इतने में पड़ा है हालाँके तू अपनी सारी गुफ़्तगू में झूटा है फिर अपने झूट पर गवाही देता और अल्लाह अज़्ज़ोजल की क़सम भी खाता है के “मैं सच्चा हूँ।” अनक़रीब वो वक़्त आएगा के तू अंधा और अपाहज होगा। खुदा तुम पर रहम करे। हक् तआला के हुज़ूर में बाअदब रहो। जो शख्स शरीअत के आदाब से अदब ना सीखेगा उसको क़यामत के दिन आग अदब



सिखाएगी। उस मुक़ाम पर किसी ने सवाल किया के फिर जिस शख्स में ये पाँचों ख़सलतें (दअवा कमाल, ग़ीबत, नज़र बा शहेवत, कज़िब और दरोग़ सलफी) हों उसके रोज़ेह और वज़ के बातिल होने का हुक्म देना चाहिए? आपने फरमाया के नहीं रोज़ेह और वज़ तो बातिल ना होगा लेकिन ये इर्शाद बतरीके वअज़ और तहदीद व तख़वीफ़ के है।

### 3- वअज़ मोरिख़ा 12 ज़ीलहज्ज 545हि०

जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के क़लूब पर भी ज़ंग आ जाता है कुरआन पढ़ना, मौत को याद रखना और वअज़ की मजलिसों में हाज़िर होना उनकी सीक़ल है पस अगर साहिबे क़ल्ब ने उस ज़ंग का तदारूक कर लिया जिस तरह के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है तो बहेतर है वरना ज़ंग स्याही बन जाता है और क़ल्ब स्याह हो जाता है। नूर से दूर हो जाने के सबब काला पड़ जाता है। दुनिया को मेहबूब समझने और तक्वा के बग़ैर (अंधा बनकर) उस पर गिरने की वजह से। क्योंकि दुनिया की मोहब्बत जिसके क़ल्ब में जगह पकड़ जाती है उसका तक्वा जाता रहता है और वो दुनिया जमा करने लगता है ख़्वाह हलाल से हो या हराम से उसके जमा करने में उसकी तमीज़ उठ जाती है और हक़ तआला से और उसके मुलाहेज़ से शर्माना ज़ायल हो जाता है।

साहिबो! अपने नबी(स०अ०स०) के इर्शाद को क़बूल करो और अपने दिलों का ज़ंग उस दवा से जो आप(स०अ०स०) ने तुम पर ज़ाहिर कर दी है साफ़ कर लो। अगर तुम में से किसी शख्स को कोई मर्ज़ लाहक़ हो जाए और कोई तबीब उसकी दवा बताए तो जब तक उसका इस्तेमाल नहीं कर लेते ज़िन्दगी दूधर पड़ जाती है

( फिर क़ल्ब के मर्ज में पैग़म्बर( स०अ०स० ) की बताई हुई दवा के इस्तेमाल से बे परवाई क्यों हैं ) अपनी ख़लवतों और अपनी जलवतों में अपने रब्बे अज़्जोज़ल का मुराक्बा रखो। उसको अपना नसब-उल-ऐन बना लो के गोया तुम उसको देख रहे हो क्योंकि अगर तुम उसको नहीं देखत तो वो तो तुम को देख रहा है ( पस उसका हर वक़्त तुम को देखते रहने का दिल से ध्यान रखना ही मुराक्बा है। जाकिर वही है जो अपने क़ल्ब से अल्लाह का ज़िक्र करे और जो क़ल्ब से ज़िक्र ना करे वो जाकिर नहीं। ज़बान तो क़ल्ब की गुलाम है और खादिम है ( और ऐतबार आका का है ना कै गुलाम का ) वअज़ के सुनने पर मदावमत कर। क्योंकि क़ल्ब वअज़ के सुनने से जब ग़ैर हाज़िर रहने लगता है तो अंधा बन जाता है। तौबा की हकीक़त ये है के जुमला अहवाल में हक़ तआला के अम्र की अज़मत मलहूज़ रहे और इसीलिए एक बुजुर्ग ने फ़रमाया है के सारी भलाई दो बातों के अन्दर है यानी हक़ तआला के हुक्म की अज़मत को मलहूज़ रखना और उसकी मख़्लूक़ पर शफ़क़त करना। हर वो शख़्स जो हक़ तआला के हुक्म की अज़मत ना करे और अल्लाह की मख़्लूक़ पर शफ़क़त ना करे वो अल्लाह से दूर है।

हक़ तआला ने मूसा अलेहिस्सलाम के पास वही भेजी थी के “रहम करता के मैं तुझ पर रहम करूँ। मैं बड़ा रहीम हूँ। जो मेरी मख़्लूक़ पर रहम करता है मैं उस पर रहम करता हूँ। और उसको अपनी जन्नत में दाख़िल कर लेता हूँ।” पस मुबारक हो रहम करने वालों को तुम्हारी तो उम्र इस किस्से में बर्बाद हुई के उन्होंने ये खाया और हम ने ये खाया। उन्होंने ये पिया और हम ने ये पिया। उन्होंने ये पहना, और हम ने ये पहना। उन्होंने इतना जमा किया और हम ने इतना जमा किया। जो शख़्स फ़लाह चाहे उसको

चाहिए के अपने नफ़्स को मोहरमात और शुबहात और ख़्वाहिशात से रोके और हक़ तआला के हुक्म को बजा लाए और ममनूआत से बाज़ रहने और उसकी तक़दीर की मवाफ़क़त करने पर जमा रहे अहले अल्लाह हक़ तआला की मईय्यत में सब्र बने रहे। और खुदा से सब्र ना सके। उन्होंने सब्र किया उसके लिए और उसी के मुताल्कि। उन्होंने सब्र किया ताके उसकी मईय्यत नसीब हो और तालिब बने ताके उसका कुर्ब उनको हासिल हो जाए। वो अपने नफ़्सों और अपनी ख़्वाहिशों और अपनी तबीअतों के घर से बाहर निकल गए। शरीअत को अपने साथ लिया और अपने रब अज़्ज़ोजल की तरफ़ चल खड़े हुए। पस उनके सामने आफ़तें आईं। होल और मसायब भी आए, ग़मूम व हमूम भी आए। भूक प्यास भी आई बरहंगी भी आई, ज़िल्लत व ख़्वारी भी आई मगर उन्होंने किसी की भी परवाह ना की ना अपनी रफ़्तार से बाज़ आए और अपनी तलब से जिस पर मुतवज्जह थे मुतगईय्यर हुए उनका रूख़ आगे की जानिब रहा और उनकी चाल सुस्त ना पड़ी। बराबर उनकी यही हालत रहती है यहाँ तक के क़ल्ब और क़ालिब का बका मुतहक्कि हो जाता है।

साहिबो! हक़ तआला से मिलने के लिए काम करो और उसकी मुलाकात से पहले उससे शर्माओ (क्या मुंह लेकर सामने जाएंगे) मोमिन की हया अब्बल हक़ तआला से है उसके बाद उसकी मख़्लूक से। अल्बत्ता उस सूरत में जिसको तअल्लुक़ हो दीन से और शरीअत की हदूद की हतक़ से, तो उस वक़्त उसको हया करना जायज़ नहीं। (बल्के अल्लाह अज़्ज़ोजल के दीन के बारे में शर्म को बालाए ताक़ रख दे और बेबाक बनकर बिला रूरिआयत नसीहत करे) दीन की हदूद को कायम करे और हक़ तआला के हुक्म की तामील करे (क्योंके वो हुक्म फरमाता



है के) दीने खुदावंदी के बारे में मुज्जिमों को सज़ा देते वक़्त तुम को शफ़क़त ना होनी चाहिए। जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का ताबअे होना जिस शख्स के लिए सही हो जाता है तो हज़रत( स०अ०स० ) उसको अपनी ज़िरह और खूद पहनाते अपनी तलवार उसके गले में डालते, अपने अदब और ख़सायल व आदात से उसको आरास्ता करते और अपनी ख़लअतों में से उसको ख़लअत बख़्शाते हैं और उससे निहायत खुश होते हैं के आपकी उम्मत में कैसा होनहार निकला और उस पर अपने परवरदिगार का शुक्रिया अदा फरमाते हैं ( के ऐसी सआदतमंद रूहानी औलाद अता फरमाई ) फिर इस अपनी उम्मत में अपना नायब उम्मत का राहनुमा और उनको दरवाज़ाए खुदावंदी की तरफ बुलाने वाला बना देते हैं। बुलाने वाले और राहनुमा आप ही थे मगर जब आपको हक़ तआला ने उठा लिया तो आपके लिए उम्मत में से वो लोग कायम कर दिये जो उनमें आपके जानशीन बनते हैं और वो लाखों बल्के अनगिनत मख़्लूक़ में से एक दो ही हैं। वो मख़्लूक़ को रास्ता बताते हैं। और उनकी ईज़ाओं को बर्दाश्त करके हर वक़्त उनकी ख़ैरख़्वाही में लगे रहते हैं। मुनाफ़िकों और फासिकों के मुंह पर हंसते और तरह तरह की तदबीरें करते हैं के किसी तरह उनको इस हालत से छुड़ाये जिसमें वो मशग़ुल हैं और हक़ तआला के दरवाज़े पर उनको ला डालें। और इसी लिए एक बुजुर्ग ने फरमाया है के “फासिक के मुंह पर नहीं हंसता मगर आरिफ़।” यानी आरिफ़ उसके मुंह पर हंसता और ऐसा ज़हिर करता है गोया उससे वाकिफ़ ही नहीं। हालाँके वो आगाह है उसके दीन के घर की वीरानी से और उसके दिल के चहेरे की स्याही से और उसके खोट और तकदुर की कसरत से। फासिक और मुनाफ़िक तो यूं गुमान करते हैं के हमारा

हाल उससे मख्फ़ी रहा। और उसने हम को पहचाना नहीं। नहीं नहीं उसकी कोई इज्जत नहीं ( जिस के सबब उनका हाल मख्फ़ी रहे ) वो आरिफ़ से छुप नहीं सकते। आरिफ़ उनको पहचान लेता है। निगाह और नज़र और बात और हक़त से। उनको शनाख़्त कर लेता है उनके ज़ाहिर और बातिन से। और उसमें मतलक़ शक़ नहीं। अफ़सोस! तुम गुमान करते हो के तुम्हारी हालत सिद्दीकीन व आरफीन व आमलीन से पौशीदा रहती है। तुम किस वक़्त तक अपनी उम्रों को नाचीज़ के अन्दर जाय करते रहोगे।

#### 4- वअज़ मोरिख़ा 7 ज़मादीउस्सानी 545हि०

आक़िल बन और झूट मत बोल। तू कहता तो ये है के मैं अल्लाह अज़्ज़ोज़ल से डरता हूँ हालाँके डरता है दूसरों से। ना किसी ज़िन्न से डर ना इंसान से ना फ़रिश्ते से और ना किसी जानवर नातिक़ या ग़ैर नातिक़ से, ना दुनिया के अज़ाब से डर और ना आख़िरत के अज़ाब से बस डरना तो उसी से चाहिए जो अज़ाब देने वाला है ( यानी हक़ तआला ) अक्लमंद शख़्स हक़ तआला के बारे में किसी मलामत गर की मलामत से डरा नहीं करता। वो ग़ैर अल्लाह की बात से बेबहेरा है ( के किसी की बात पर भी कान नहीं धरता ) सारी मख़्लूक़ उसके नज़दीक ( गोया ) बेक़स बीमार और मेहताज है। यही शख़्स और जिनकी भी उस जैसी हालत हो असल अलामत हैं जिनके इल्म से नफ़अ पहुँचता है। जो शरीअत और हक़ायक़े इस्लाम के आलिम हैं वो दीन के तबीब हैं के दीन की शिक़स्तगी को जोड़ते हैं। ऐ वो शख़्स जिसका दीन शिक़स्ता हो गया है उनकी तरफ़ क़दम बढ़ाता के वो तेरी शिक़स्तगी की बंदिश करें। जिस ( खुदा ) ने बीमारी उतारी है वही दवा भी उतारता है। ( पस इलाज से ना उम्मीद मत हो। बाक़ी रहा बीमारी में मुबतला करना तो वो ख़ास मसलेहत की

वजह से है और ) वो मसलेहत को दूसरों से ज़्यादा जानता है। तू अपने रब पर उसके फ़अेल में तोहमत मत रख। ( के बिला वजह बीमार बना दिया ) इल्ज़ामात और मलामत के लिए तेरा नफ़्स दूसरों की बनिसबत ज़्यादा मुसतहिक है। नफ़्स से कह दे के अता उसके लिए है जो अताअत करे और असा उसके लिए है जो मअसीयत करे ( पस ना तो मअसीयत करता ना अमराज़ की लाठियाँ खाता ) जब अल्लाह किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो ( उसकी सहेत व दौलत ) छीन लेता है। पस अगर वो सब करता है तो उसको रफ़अत बख़्शाता है। खुश ऐशी नसीब फरमाता, अताओं से नवाज़ता और सरमाया अता फरमाता है। या अल्लाह हम तुझ से क़र्ब का बग़ैर बला के सवाल करते हैं। अपनी क़ज़ा व क़द्र मैं हमारे साथ शफ़क़त का बर्ताओ कर और शरीरों की शरारत और बदकारों की मक्कारी से हम को बचा और हमारी हिफाज़त फरमा। जिस तरीक़े से भी तू चाहे और जिस तरह चाहे। हम तुझ से सवाल करते हैं दीन में और दुनिया व आख़िरत में अफ़्व और आफ़ीयत का। हम तुझ से सवाल करते हैं आमाले सालेहा की तौफीक़ का और आमाल में इख़्लास का। हमारी दुआ क़बूल फरमा ले।

अल्लाहुम्मग़फ़िर लीमोअल्लीफीही वली कातीबीही  
वली वालीदीहिमा



एक उपाय  
सबका भलाई

# ‘ईल्मे दीन फैलाव’



## ईमान बचाव अभियान



# किताब दोस्त

हिन्दी और उर्दू किताबें

**50% OFF**

# Discount

में घर बैठे किताब मंगवाए



बिना ईल्मे दीन का नेक अमल नहीं किया जा सकता  
और बिना नेक अमल का ईमान नहीं बचाया जा सकता  
और बिना ईमान का मुसलमान नहीं बन सकते हैं

किताब मंगवाने के लिए संपर्क करें 9534124663

Only Message